बिर्ख खड़का डुवर्सेली

फर्क

इ-मेल-birkhakd@gmail.com

रास्ते में मनमोहन की मुलाकात उसके शिक्षक से हुई। उन्होंने उसे प्राथमिक पाठशाला में पढ़ाया था। उसने उनके पैर छूए और स्वास्थ्य के बारे में पूछा।

इसी बीच वहाँ से दो लड़के गुजरे। दोनों मुँह बनाकर 'हो-हो' हँस रहे थे। मनमोहन से शिक्षक ने पूछा, "कौन हैं ये बदमाश ?"

"ये मेरे छात्र हैं ।" मनमोहन बोला।

"जमाना बदल गया है।" शिक्षक बुदबुदाये।

आतंक

ट्रेफिक पुलिसकर्मी अपने काम में सेवारत था। सड़क के बीचों-बीच और नियमपूर्वक गाड़ियों के आवागमन को सुचारु ढंग से नियंत्रित कर रहा था। तभी एक सुंदर तथा महंगी कार ने गलत तरीके से यू -टर्न काटकर निकल जाना चाहा। वह वहाँ पहुँचा और चालक को धमकाया। तब गाड़ी से एक भद्र सज्जन निकला। उसने उस ट्रेफिक पुलिसकर्मी पर दनादन दो थप्पड़ जड़ दिए । बोला, "देखता नहीं है, यह गाड़ी एमपी की है !"

घटना बड़ी खबर बन गई। दूसरे दिन खबर आग की तरह फैल गई। नंग और दबंग राजनीतिकों द्वारा उस ईमानदार पुलिसकर्मी को मानसिक रोगी बताया जाने लगा।

और, वह बेचारा डर रहा था कि कर्तव्य के प्रति निष्ठा के चलते, कहीं उसकी नौकरी न चली जाए।

जरूरत

शाम का समय था । समरेन्द्र जी टहलने के लिए घर से बाहर निकले थे । बाहर ही एक औरत मिल गयी । उसने अचानक पूछा, "सा'ब, घर में काम कौन करता है, मतलब—झाड़ू-पोंछा, साफ-सफाई, कपड़े धोना, खाना बनाना...।,

वह बोले, "मैं करता हूँ, श्रीमती करती है।"

अचानक उसे याद आया, वह तो बच्चों को लेकर मायके गई है, झगड़कर।

"मैडम नहीं होती है, तब ?" उसने पूछा।

वह चुप रह गया, सोच में पड़ गया ।

वह बोली, "मैं 'सब' काम कर सकती हूँ।"

तब वह बोला, "कल से ही काम पर आ जाओ।"

बिर्ख खड़का डुवर्सेली

बड़ा आदमी

नए घर की खिड़की के पास ही नरेन्द्र ने बरगद के बोन्साई को लाकर रखा ताकि उसकी माँ और पत्नी की नज़र पड़े और खुश हो जाएँ।

"क्या है यह?" माँ ने पूछा।

"बरगद का पेड़ है। बढ़ने न देकर छोटे रूप में रखा गया बोन्साई है। बहुत दाम में बिकता है ।"

"यदि मैं तुम्हें खाने और खेलने न देखर छोटा ही रखती तो तू भी छोटा ही रह जाता, बड़ा आदमी बन पाता ?"

नरेन्द्र जवाब नहीं दे सका, चुप रहा ।

"प्रकृति के नियम के विरुद्ध हुए काम को कैसे सह लेते हो ?" माँ का दूसरा सवाल था ।

दूसरे दिन खिड़की से बोन्साई बरगद का पेड़ नदारद देखकर माँ मुस्कुराई और पत्नी भी प्रसन्न थी।